समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

मासिक समाचार–पत्र

वर्ष–2021
YEAR-2021

संस्करण–चतुर्दश माह–जुलाई
Edition -XIV Month- JULY

जलवायु परिवर्तन या प्रलय की आहट

जलवायु परिवर्तन एक विश्वव्यापी समस्या के रूप में हमारे समक्ष खडा है। कोरोना के विषाणु से जहां एक ओर पूरा विश्व संकट में पडा है वही जलवायु परिवर्तन के भयानक परिणाम दृष्टिगोचर होने लगे हैं। एशिया से यूरोप तक मौसम के असामान्य परिवर्तन ने वैज्ञानिकों को भी चिंता में डाल दिया है संपूर्ण विश्व मौसम के इस कहर से पूरी तरह से त्रस्त हो चुका है यहां तक कि अंटार्कटिक और आर्कटिक महाद्वीप मौसम की स्थिति से अछूते नहीं हैं। जलवायु परिवर्तन ने यहां भी अपना कहर बरपाया है जिसके गंभीर परिणाम दृष्टिगोचर हो सकते हैं ऐसा वैज्ञानिकों का अनुमान है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि हम लोगों ने स्वयं इन परिस्थितियों को जन्म दिया है। प्राकृतिक संसाधनों का आवश्यकता से अधिक दोहन शक्तिशाली बनने की होड में किए जा रहे हैं आणविक शस्त्रों का निर्माण और परीक्षण, बढती जनसंख्या के दबाव में जंगलों को काटा जाना और आबादी को बसाने का प्रयास अर्थात कंक्रीट के जंगलों का निर्माण जलवायु परिवर्तन के एक बहुत बडे कारक है। विकास की दौड में विश्व जिस त्रासदी को जन्म दे रहा है कहीं वह विनाशकारी प्रलय का कारण ना बन जाए। तकनीकी (technology) के नाम पर जिस तरह के प्रयोग किए जा रहे हैं उसका एक ज्वलंत उदाहरण कोरोना वायरस के रूप में भी देखा जा सकता है। सर्वाधिक विकसित कहे जाने वाले देश जैसे अमेरिका, रूस ,चीन आदि अधिक से अधिक शक्तिशाली बनने की होड में घातक से घातक आण्विक अस्त्रों का निर्माण कर ही रहे हैं अधिक से अधिक दूरी तक प्रहार करने में सक्षम प्रक्षेपास्त्रों का भी निरंतर निर्माण कर रहे हैं। इन घातक शस्त्रों के निर्माण और लगातार हो रहे परीक्षणों के कारण जलवायु प्रणाली बुरी तरह प्रभावित हो रही है। निरंतर हो रहे युद्धाभ्यास जो संभवतरू एक दूसरे के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा शक्ति परीक्षण मात्र है जिसकी जमीनी सच्चाई अज्ञात है परंतु बारूदी धुआं मौसम को विषाक्त करने में अपनी भरपूर भूमिका निभा रहा है।दूसरे चंद्रमा और सूर्य के निर्माण किये जा रहे रहे हैं। प्राकृतिक प्रणाली के साथ किया जा रहा इस तरह का मजाक कहीं पूरी मानवता और मानव समाज को पूर्णतः समाप्त ही न कर दे। रूस ,चीन, अमेरिका यूरोपीय देश भारत आदि सभी देश मौसम की एक भयानक त्रासदी जो बाढ के रूप में प्रदर्शित हो रही है के वार को झेल रहे हैं।पूर्णतः जलमग्न होते जा रहे हैं।कभी अत्यधिक गर्मी तो कभी मूसलाधार बारिश यहां तक की आर्कटिक महाद्वीप भी इससे अछूता नहीं रहा। अभी कुछ दिनों पूर्व आर्कटिक महाद्वीप में तापमान 18.8 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया जो एक भयानक संकेत है विनाश का क्योंकि इसके परिणाम स्वरूप आर्कटिक महाद्वीप की बर्फ का पिघलना तय है जिससे समुद्र का जलस्तर निरंतर बढते जाना निश्चित है। यह तय है कि समुद्र का ये बढता जलस्तर विभिन्न द्वीपों और समुद्र के किनारे बसे नगरो को पूरी तरह से जलमग्न कर देंगे सुनामी से भी भयंकर जल आपदा स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही है जिसे रोकने का उपाय करने के बजाय लगभग सभी देश विकसित या विकासशील जंगी उन्माद में उलझे हुए हैं और युद्धक सामग्री को एकत्रित करने में जुटे हुए हैं । आणविक परमाणविक और हमारे देश भारत में बढती हुई जनसंख्या एक और दबाव बढाती जा रही है नगरों के निर्माण की। शहरी क्षेत्र की आबादी अब गांवों से होकर वनों की दिशा में भी बढ रही है। वृक्षों का भरपूर कटान हो रहा है और नगर बस्तियों का निर्माण जिसके परिणाम स्वरूप प्राचीन वनस्पतिया वृक्ष विलुप्तता की कगार पर खडे हैं। वन्य जीवों का भी जीवन संकट में आ गया है। प्रकृति ने वनस्पति ,वृक्ष, जीवो का निर्माण संभवतः एक दूसरे के पूरक के रूप में किया है। ऐसा नहीं है कि मनुष्य प्रकृति या प्राकृतिक सीमाओं के अंतर्गत नहीं आता। क्योंकि पृथ्वी जो धारण करने में समर्थ होती है वह सर्वप्रथम अपनी मर्यादाओं को ही धारण करती है और प्रकृति के साथ किया जाने वाला यह भयानक मानवीय खिलवाड प्राकृतिक मर्यादाओं का पूर्णतः उल्लंघन ही है।

अतः हमें अपनी जिम्मेदारियों को समझना होगा और जहरीले धुएं, विस्फोटकीय ध्वनियों, जहरीली गैसों और फैक्ट्रियों से निकली दूषित गंदगियों का निराकरण सोचना होगा क्योंकि वायु ध्वनि और जल जो जीवन के आधारभूत संसाधन हैं। इनके ऊपर किया जा रहा कुठाराघात मानवीय सभ्यता को नेस्तनाबूत कर देगा और वर्तमान मानव सभ्यता भी पुनः काल के अंधकार में विलुप्त हो जाएगी।

संपादक
तरुण सिंह

स्वामी, ,मुद्रक एवं प्रकाशक
नाद अनुसंधान ट्रस्ट(पंजीकृत)

प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी
तकनीकि सहयोग– सभ्यता सिंह

सह–संपादक
अभय प्रताप सिंह,संस्कृति सिंह

सम्पादकीय विभाग
संपादक–तरुण सिंह

विशेष संवाददाता
तनुज कुमार

समृद्ध भारत जागृति

पेड के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी

1. पेड धरती पर सबसे पुरानें living organism हैं, और ये कभी भी ज्यादा उम्र की वजह से नही मरते.

2. हर साल 5 अरब पेड़ लगाए जा रहे है लेकिन हर साल 10 अरब पेड़ काटे भी जा रहे हैं.

3. एक पेड़ दिन में इतनी ऑक्सीजन देता है कि 4 आदमी जिंदा रह सकें.

4. देशों की बात करें, तो दुनिया में सबसे ज्यादा पेड़ रूस में है उसके बाद कनाडा में उसके बाद ब्राजील में फिर अमेरिका में और उसके बाद भारत में केवल 35 अरब पेड बचे हैं.

6. दुनिया की बात करें, तो 1 इंसान के लिए 422 पेड बचे है. लेकिन अगर भारत की बात करें , तो 1 हिंदुस्तानी के लिए सिर्फ 28 पेड बचे हैं.

7. पेडो की कतार धूल–मिट्टी के स्तर को 75% तक कम कर देती है. और 50% तक शोर को कम करती हैं.

8. एक पेड़ इतनी ठंड पैदा करता है जितनी 1 AC 10 कमरों में 20 घंटो तक चलने पर करता है. जो इलाका पेडो से घिरा होता है वह दूसरे इलाकों की तुलना में 9 डिग्री ठंडा रहता हैं.

9. पेड़ अपनी 10% खुराक मिट्टी से और 90% खुराक हवा से लेते है।

10. एक एकड में लगे हुए पेड़ 1 साल में इतनी Co2सोख लेते है
जितनी एक कार 41,000 km चलने पर छोडती हैं.

11. दुनिया की 20% oxygen अमेजन के जंगलो द्वारा पैदा की जाती हैं. ये जंगल 8 करोड 15लाख एकड में फैले हुए हैं.

12. इंसानो की तरह पेडो को भी कैंसर होती है. कैंसर होने के बाद
पेड़ कम ऑक्सीजन देने लगते हैं.

13. पेड की जडे बहुत नीचे तक जा सकती है. दक्षिण अफ्रिका में एक अंजीर के पेड़ की जडे 400 फीट नीचे तक पाई गई थी.

14. दुनिया का सबसे पुराना पेड़ स्वीडन के डलारना प्रांतमें है. टीजिक्को नाम का यह पेड 9,550 साल पुराना है.

15. किसी एक पेड का नाम लेना मुश्किल है लेकिन तुलसी, पीपल, नीम और बरगद दूसरों के मुकाबले ज्यादा ऑक्सीजन पैदा करते हैं.

इस बरसात में कम से कम पांच पेड अवश्य लगायें .
स्वयं जगें लोगों को जगाएं...मिलकर पर्यावरण बचाएँ .
आइये इस धरा का सौंदर्य वृक्ष लगा कर बढ़ाएं .

What are the Objectives in Accounting for Income Taxes?

Tax accounting is one of the largest subsets or specializations within the field of accounting. In terms of corporate finance, there are several objectives when it comes to accounting for income taxes and optimizing a company's valuation

Main Objectives - The three main objectives in accounting for income taxes are:

Optimizing After-Tax Profits - First, a company's income tax accounting should be in line with its operating strategy. That is, to maximize profits a company must understand how it incurs tax liabilities and adjust its strategies accordingly.

Funding Considerations - Secondly, income tax accounting can enable a company to maintain financial flexibility. There are different effects of funding the company's operations with debt and/or equity, and a company's capital structure can influence its tax liability. Knowing these effects will allow the company to plan accordingly and transitively maintain their financial flexibility by keeping their options open.

Timing of Payments - Finally, accounting for tax enables the company to manage cash flow and minimize cash taxes paid. It is beneficial to postpone payment of taxes into the future, as opposed to paying taxes today. A company will want to take tax deductions sooner rather than later to maximize the time value of their money.

What Should an Analyst Understand about Tax?

Tax is an complicated field to navigate and often confuses even the most skilled financial analysts. This is keeping in mind that there are numerous tax codes and policies in any given jurisdiction, and numerous jurisdictions with different tax policies to worsen the effect.

A working knowledge of tax accounting, thus, becomes a great skill to have as a financial analyst. When speaking of just the bare necessities, an analyst should at least have a solid conceptual understanding of the following:

- Exceptions to certain policies
- An understanding of common issues that arise with taxes
- An understanding of the interplay of deferred taxes, current taxes, and effective tax rates
- An understanding of the impact of taxes on cash flow
- How to apply this understanding in financial modeling

Income Tax vs. Accounting Tax

Tax as recorded in a company's financial statement rarely ever matches the taxes filed in their tax returns. It is because each item (company financials and tax return) has different purposes, users, and accounting treatment. The company's financials are intended for investors and lenders, and – as such – are made with application and dependability in mind. In contrast, the tax return is intended for the government or corresponding tax body and is made with the purpose of adhering to public tax policy.

The financial statements report a tax expense, but the true tax payable comes from the tax return. The opposition in reporting these two items creates differences that need to be reconciled and accounted for. These differences are either permanent differences, which never reverse, or temporary differences, which are timing differences that will reverse over time.

Sunil Aggarwal
Aggarwal Sunil & Associates
Chartered Accountants
88269 97310

नहीं रहे आचार्य पंडित अनुपम राय
श्रद्धांजलि

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'

प्रयागराज की पावन भूमि में जन्मे और पले–बढे तथा लगभग तीन दशकों से मुंबई में रह रहे अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त नाद, लय व नृत्य योगी आचार्य पंडित अनुपम राय का 27 जून को प्रातः काल 3रू45 बजे असामयिक निधन हो गया। रात्रि लगभग 11 बजे तक शिष्य – शिष्याओं को सिखाने के उपरांत वे अच्छे – भले सोए थे कि अचानक दो बजे बाद उनके मुंह में कफ आने लगा। एक – दो बार उसे बाहर थूकने के बाद ही उनके नेत्र लाल होने लगे। अनहोनी की आशंका में जब उनके प्रमुख शिष्य व पुत्र अनुरत्न राय उन्हें हॉस्पिटल लेकर पहुंचे कि थोडी ही देर में उनके प्राण – पखेरू उड गए। प्रातः काल तक तो यह दुखद समाचार जंगल में आग की तरह पूरे देश में फैल गया। विदेशों में फैले उनके शिष्य – परिकर तक भी इसे फैलने में देर न लगी।

मुझे भी जब सुबह – सुबह यह दुखद समाचार मिला, सहसा विश्वास कर पाना मुश्किल हो रहा था किंतु जब उनके पुत्र श्री अनुरत्न राय से बात की तो मेरे दुःख का ठिकाना न रहा।

अनुपम जी जैसा अनुपम नाद, नृत्य और लय योगी सदियों में ही आता है। अब भी विश्वास नहीं हो रहा कि वह अब भौतिक रूप से हमारे मध्य नहीं रहे। विगत वर्ष अगस्त माह में उनको जब मेरी बीमारी का पता चला तो दिल्ली में मेरे पास उनका फोन आया। उस समय मैं अपनी बेटी श्रीमती एकता विशाल बंसल के घर में रह रहा था। मैं बेहद निराश था। जीवन के प्रति मोह – भंग सा हो गया था। उन्होंने मुझे फोन पर कहा था कि डॉक्टर साहब ! अभी निराश नहीं होना है और यदि चलने का ही इरादा है तो थोड़ा–सा रुक जाओ। साथ–साथ चलेंगे थोड़े दिनों बाद। आखिर वहाँ भी तो संगीत, साहित्य, कला, संस्कृति, दर्शन और अध्यात्म पर चर्चा करने को कोई चाहिए। पर ऐसा पता नहीं था कि वह अपने अग्रज को (मुझे) ऐसे धोखा देकर चुपके–से अनन्त की यात्रा हेतु कूच कर जाएंगे और मुझे ही क्या, हम सबको दुःखी कर जाएंगे।

आज के दौर में जबकि शास्त्रीय संगीत के प्रति न केवल शिक्षार्थियों के रुझान में कमी आ रही है बल्कि गुरुजन भी अंधी कमाई की दौड में हर प्रकार से साम्य बिठाने में लगे पडे हैं, अनुपम राय ने कभी समझौता नहीं किया। वे केवल और केवल विशुद्ध शास्त्रीय गायन, तबला या पखावज वादन और नटवरी कथक नृत्य के लिए ही पूर्ण रूप से समर्पित थे। वे प्राचीन गुरुकुल पद्धति के अनुसार ही अपने घर पर शिष्यों को रखकर शिक्षा प्रदान करते थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि जब मात्र नौ वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने शिक्षा देनी प्रारंभ की तब उनके पहले शिष्य श्री मोंटू गिरि (अब स्वर्गीय) पूरे 25 वर्ष के थे। बाद में वे सुप्रसिद्ध कथक नर्तक के रूप में जाने गए। इसी से अनुपम जी की अनुपम प्रतिभा का अंदाजा लगाया जा सकता है।

मेरे अनुपम जी से लगभग साढे चार दशकों से संबंध थे। पहले वे विदेशों में ही अधिक कार्यक्रम करते थे। जैसे ही स्वदेश लौटते तो 3 – 4 दिनों के लिए अवश्य ही मथुरा आते। संगीत, साहित्य, काव्य, अध्यात्म, दर्शन आदि के गूढ से गूढ विषयों पर गहन चिंतन – मनन के लिए वे होटलों में ठहरकर और बेशुमार पैसा खर्च कर आनंद लिया करते थे। विगत वर्ष ही जब उनके षष्ठी पूर्ति समारोह का प्रयागराज में आयोजन होना था तो उनकी जदि पर मुझे उसके संचालन हेतु वहां जाना पडा। वर्षों से स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से परेशान रहने के बाद जब वे पुनः पूरी सरगर्मी के साथ मंच पर प्रस्तुतियां देने लगे तो असमय ही विधाता ने उन्हें हमसे छीन लिया।

भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट द्वारा मेरी धर्मपत्नी संगीत – विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण की प्रथम पुण्य – तिथि से ही उन्होंने मथुरा में संगीत – विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण स्मृति – समारोह "परम्परा" का श्रीगणेश कराया। यही नहीं, तीन वर्ष तक तो वे लगातार मुंबई से कार्यक्रम देने भी अपने पुत्र अथवा शिष्य – शिष्याओं के साथ पधारे। उसके बाद भी वे कई बार समारोह में पधार चुके थे।

कोविड – 19 की समस्या के चलते विगत वर्ष जब मैंने समारोह करने में असमर्थता व्यक्त की तो उनके शब्द थे.....

"डॉक्टर साहब, अनुपम द्वारा शुरू कराया कार्यक्रम तो बन्द नहीं होगा। यदि आप अपने स्वास्थ्य संबंधी एवं अन्य समस्याओं के चलते नहीं करा सकते तो हम मुंबई से ही ऑनलाइन कर लेंगे।"

एक दशक पूर्ण होने के बाद लग रहा था कि इस बार शायद बन्द हो जाएगा किंतु 11 वें वर्ष में भी कार्यक्रम हुआ भी और एक नहीं, दो दिन हुआ। वह भी बहुत शानदार ढंग से।

ऐसा था उनका आत्म – बल जिसकी तुलना नहीं की जा सकती। उनके मुख का दिव्य तेज बरबस की हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। जब भी कला प्रदर्शन के लिए मंच पर उनका पदार्पण होता, विद्वान् कलाकारों और श्रोताओं सहित रसिकों की भीड इकट्ठा हो जाती। प्रदर्शन के समय एक – एक चीज को बारीकी से समझाते जाते थे वो। स्वयं द्वारा निर्मित हजघरों बंदिशें और ताल – रचनाएं होने के बावजूद भी विभिन्न घरानों की सैकडों बंदिशें उनके कंठ में बसी हुई थीं। वह विशुद्ध नटवरी कथक नृत्य की शिक्षा के हिमायती थे। वर्तमान में वह केवल एक ही शिष्या सुश्री श्रिया पोपट को नृत्य की शिक्षा प्रदान कर रहे थे।

मेरी हार्दिक संवेदनाएं अनुपम जी की धर्मपत्नी व शिष्या विदुषी श्रीमती रीता राय भाभीजी, सुपुत्री विदुषी अनुरिता राय और सुपुत्र युवा गंधर्व श्री अनुरत्न राय सहित देश – विदेश में फैले सम्पूर्ण शिष्य – परिकर और संगीतांजलि परिवार के साथ हैं।

परम् पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं की दिवंगत महान् आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें।

क्या लिखूं? क्या न लिखूं ?? शब्द भी नहीं लिखे जा रहे अब। अन्त में लेखनी को विराम देते हुए बस इतना ही कहूंगा कि –

आँखों में बस अश्रु हैं, वाणी भी है मौन।
कहे 'रजक' किससे व्यथा और सुनेगा कौन??

प्रिय मित्र अनुपम राय को नाद अनुसंधान ट्रस्ट और समृद्ध भारत परिवार की ओर से अश्रुपूर्ण विनम्र श्रद्धांजलि !!!

अनुसंधान

अनुपम अनुपम

****

अनुपम नादाराधक अनुपम,
अनुपम तबला वादक अनुपम।
अनुपम मृदंग वादक अनुपम,
अनुपम नटवरी कथक अनुपम।।

अनुपम साहित्यकार अनुपम।
अनुपम वाग्गेयकार अनुपम।।
अनुपम सद् व्यवहार में अनुपम।
अनुपम सद् विचार में अनुपम।।

अनुपम ठाट–बाट में अनुपम।
अनुपम बोल–बाँट–लय अनुपम।।
अनुपम थाप–चांट–लौ अनुपम।
अनुपम लय–दर्जे में अनुपम।।

अनुपम गम हर लेते अनुपम,
अनुपम तम हर लेते अनुपम।
अनुपम का पड़ता सम अनुपम,
अनुपम सम नहिं कोई अनुपम।।

अनुपम को जानेगा अनुपम,
अनुपम को मानेगा अनुपम।
अनुपम 'रजक' रहेंगे अनुपम,
अनुपम अनुपम अनुपम अनुपम।।

अनुपम थे, हो, रहोगे अनुपम,
अनुपम हरदम अनुपम अनुपम।
'रजक' मित्र यह करे कामना,
अनुपम चरण गहो प्रभु अनुपम।।

रीता – रीता लग रहा,
अनुपम बिनु संसार।
यही जगत की रीति है,
सब जाते उस पार।।
सब जाते उस पार,
छोड़ निस्सार जगत को।
लाख चाह कर बचा
सका कोई न किसी को।।
श्र ज कश मृत्यु है अटल
सत्य, कहती यह गीता।
रह जाता हर मनुज,
एक दिन रीता – रीता।।

अनुपम नैंकु न लग रहा,
अनुपम बिनु संसार।
अनुपम बिनु सुर, ताल अरु
नृत्य लगें निस्सार।।
नृत्य लगें निस्सार,
याद अमुपम तरसावै।
घड़ी–घड़ी कवि 'र ज क',
हिया बस फट–फट जावै।।
गमन तुम्हारा देख,
छा गया धरती पर तम।
क्यों कर बिछड़ गए
अपनों से, प्यारे अनुपम??

Infrastructure Investment Trust

Benjamin Franklin once said "An Investment in Knowledge pays the best interest". So today we are going to invest in our knowledge and will learn about an unconventional investment product known as "Infrastructure Investment Trust"
An Infrastructure Investment Trust's structure is very similar to that of Mutual Fund where a fund manager is appointed who is an experienced fellow and manages a pool of money with a specified investment strategy and asset class. People invest in InvIT's to diversify their portfolios by getting exposure to a new asset class.

Suitability:

Suppose there is a fictitious person named Mr. X. He is a moderate risk taking investor and lives in a country where the govt. is spending heavily in building up the infrastructure for development of the overall economy. In order to take the advantage of this growth in infra. sector he can invest in InvIT's where he will become a shareholder of this trust ie. he will become a part owner with a limited liability (up-to the amount of investment) of the trust and will now be entitled to earn a dividend declared by the trust every 6 months to all its shareholders from the earnings of the trust's infra. projects in proportion of the no. of shares he owns. Also the capital appreciation from increase in share price over-time will serve as the additional reward for shareholders.
Now let's understand the key features of "Infrastructure Investment Trust".

Key Features:

- It is a trust which raises money from individuals, companies and institutions to invest in infra. Projects.
• The money raised is used to construct highways. Dams, power and energy farms, towers etc.
• Revenue generated from these projects are distributed to shareholders as dividends.

Important Rules:

• InvIT's have to distribute 90% of its revenues as dividends. Dividends have to be declared every 6 months
• Minimum subscription amount for InvIT's as per SEBI is 1,00,000/- At least 80% of assets should be invested in revenue generating infra projects with 3 years lock-in

Pros:

• Stable source of fixed income
•Volatility is lower than stocks
• Managed by experts of the industry

Cons:

• Regulatory and compliance risks
• Long gestation periods of projects
• Huge dependence on external factors

I hope you got a basic understanding of how InvIT's work. But the decision to invest or not in InvIT's should be made only after in-depth understanding and conviction.

Hope you enjoyed the reading.

Pawas Aggarwal
91 87558 26311

Mrigaashree
MRIGAASHREE CAPITAL PVT. LTD.
Mutual Funds | Insurance | PMS | Equity | Commodities | Currency | Bonds | IPOs | Fixed Deposits

हमारे शब्द ही, हमारे कर्म, !

18 दिन के युद्ध ने, द्रोपदी की उम्र को 80 वर्ष जैसा कर दिया था ...शारीरिक रूप से भी और मानसिक रूप से भी शहर में चारों तरफ विधवाओं का बाहुल्य था.. पुरुष इक्का–दुक्का ही दिखाई पडता था अनाथ बच्चे घूमते दिखाई पडते थे और उन सबकी वह महारानी द्रौपदी हस्तिनापुर के महल में निश्चेष्ट बैठी हुई शून्य को निहार रही थी।

तभी,श्रीकृष्ण कक्ष में दाखिल होते हैं द्रौपदी कृष्ण को देखते ही दौडकर उनसे लिपट जाती है ... कृष्ण उसके सिर को सहलाते रहते हैं और रोने देते हैं थोडी देर में, उसे खुद से अलग करके समीप बैठा देते हैं । द्रोपदी : यह क्या हो गया सखा ? ऐसा तो मैंने नहीं सोचा था ।

कृष्ण : नियति बहुत क्रूर होती है पांचाली..वह हमारे सोचने के अनुरूप नहीं चलती !वह हमारे कर्मों को परिणामों में बदल देती है..तुम प्रतिशोध लेना चाहती थी और, तुम सफल हुई, द्रौपदी ! तुम्हारा प्रतिशोध पूरा हुआ... सिर्फ दुर्योधन और दुशासन ही नहीं, सारे कौरव समाप्त हो गए तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिए !

द्रोपदी : सखा, तुम मेरे घावों को सहलाने आए हो या उन पर नमक छिडकने के लिए ?

कृष्ण : नहीं द्रौपदी, मैं तो तुम्हें वास्तविकता से अवगत कराने के लिए आया हूँ हमारे कर्मों के परिणाम को

हम, दूर तक नहीं देख पाते हैं और जब वे समक्ष होते हैं..

तो, हमारे हाथ में कुछ नहीं रहता। द्रोपदी : तो क्या, इस युद्ध के लिए पूर्ण रूप से मैं ही उत्तरदायी हूँ कृष्ण ? कृष्ण : नहीं, द्रौपदी तुम स्वयं को इतना महत्वपूर्ण मत समझो...

लेकिन,तुम अपने कर्मों में थोडी सी दूरदर्शिता रखती तो, स्वयं इतना कष्ट कभी नहीं पाती।

द्रोपदी : मैं क्या कर सकती थी कृष्ण ?तुम बहुत कुछ कर सकती थी

कृष्ण :– जब तुम्हारा स्वयंवर हुआ,.....तब तुम कर्ण को अपमानित नहीं करती और उसे प्रतियोगिता में भाग लेने का एक अवसर देती तो, शायद परिणाम कुछ और होते ! इसके बाद जब कुंती ने तुम्हें पाँच पतियों की पत्नी बनने का आदेश दिया,तब तुम उसे स्वीकार नहीं करती तो भी, परिणाम कुछ और होते ।

और उसके बाद तुमने अपने महल में दुर्योधन को अपमानित किया...कि अंधों के पुत्र अंधे होते हैं।वह नहीं कहती तो, तुम्हारा चीर हरण नहीं होता...तब भी शायद, परिस्थितियाँ कुछ और होती । "हमारे शब्द भी हमारे कर्म होते हैं" द्रोपदी...और, हमें

"अपने हर शब्द को बोलने से पहले तोलना बहुत जरूरी होता है"..अन्यथा, उसके दुष्परिणाम सिर्फ स्वयं को ही नहीं... अपने पूरे परिवेश को दुखी करते रहते हैं ।

संसार में केवल मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है...जिसका जहर उसके दाँतों में नहीं, शब्दों में है...इसलिए शब्दों का प्रयोग सोच समझकर करें। ऐसे शब्द का प्रयोग कीजिये जिससे, . किसी की भावना को ठेस ना पहुँचे। क्योंकि..... 'महाभारत हमारे अंदर ही छिपा हुआ है ।'

मित्र की आवश्यकता
(तीन कछुओं की कहानी)

एक तालाब में तीन कछुए थे। दो कछुए आपस में खूब लडाई करते थे। तीसरा कछुआ समझदार था , वह इन दोनों के लडाई में नहीं पडता था। एक दिन की बात है लडाई करने वाले कछुए में से एक पत्थर से गिरकर उल्टा हो गया था। कछुए का पैर आसमान की ओर था और पीठ जमीन पर लगी हुई थी। उस कछुए ने काफी प्रयत्न किया किंतु वह सीधा नहीं हो पाया। आज उसे पछतावा हो रहा था उसने जीवन में लडाई – झगडे के अलावा और किया ही क्या था। उल्टा हुए उसे काफी समय हो गया कोई भी उसके पास नहीं आया।

तालाब में दोनों कछुए इंतजार कर रहे थे।

काफी समय बीत जाने के बाद भी जब वह तालाब में नहीं आया। दोनों कछुओं को संदेह हुआ। दोनों कछुए ने ढूंढने का मन बनाया और तालाब से बाहर निकलकर उस की खोज करने लगे। तालाब से कुछ दूर एक पत्थर था , उसके उस पर वह कछुआ उल्टा गिरा हुआ था। दोनों कछुए दौडते हुए गए और उसे सीधा करके हालचाल पूछने लगे। वह कछुआ अपने किए पर शर्मिंदा था। जोर दृ जोर से रोने लगा और दोनों से फिर कभी लडाई न करने की बात कहकर माफी मांगने लगा।

तबसे तीनों कछुए तालाब में दोस्त बनकर रहने लगे।

एक दूसरे के साथ फिर कभी लडाई नहीं करते थे। क्योंकि उन्हें मालूम हो गया था कि एक – दूसरे की सहायता के बिना उनका जीना मुश्किल है।

नैतिक शिक्षा

अपने आसपास के लोगों से बैर नहीं करना चाहिए , क्योंकि समय पडने पर वही काम आते हैं।

बदनाम बस्ती बसई

मुगल काल में आगरा के ताजमहल से
मात्र 2 किलोमीटर की दूरी पर ही जहाँगीर और शाहजहाँ द्वारा सैनिकों और दरबारियों के मनोरंजनार्थ और उनकी कामेच्छा या यौनेच्छा की पूर्ति
हेतु जो बदनाम बस्ती बसाई गई थी,
उसे ही बसई या वसई के नाम से जाना जाता है। यहाँ की गलियों के दोनों ओर नीचे की ओर दुकानों की कतारें हैं तो ऊपरी तलों पर वेश्या–वृत्ति का कारोबार होता रहा है। बसई पहले छोटा–सा गाँव था जो बाद में वेश्या–वृत्ति का एक प्रमुख अड्डा बन गया। मुगल शासन की समाप्ति के बाद यह ब्रिटिश सैनिकों के मनोरंजन एवं सेक्स–वर्कर्स का प्रमुख ठिकाना बन गया। ऐसा भी माना जाता है कि शाहजहाँ द्वारा निर्मित विश्व के सातवें अजूबे 'ताजमहल' को आश्चर्यजनक रूप देने हेतु दुनियाभर के कारीगरों को वहीं रखकर इसका निर्माण–कार्य पूर्ण कराया गया था। इन कारीगरों को वहाँ से जाने की अनुमति नहीं थी। अतः ताजमहल के निर्माण के समय जी–जान से जुटने वाले इन कारीगरों के मनोरंजन और काम–वासना की पूर्ति के लिए ही इस गाँव को इस रूप में बसाया गया था। कभी यहाँ नाच–गाने की आवाजें गूँजती रहती थीं जिनको सरकार द्वारा इस पर पाबन्दी के बाद भी अब भी कभी–कभी सुना जा सकता है। ग्राहकों की कामेच्छा की पूर्ति के लिए यहाँ 10 फीट लम्बे और 5 फीट चौड़े कमरे बने हुए हैं।
इस कार्य को बेड़िया जाति के लोग यहाँ करते आए हैं। यहाँ धन्धे पर रोक लग जाने के बाद लगभग सभी वेश्याएँ मुम्बई जा बसीं और वहाँ के डांस–बारों का हिस्सा बन गईं। किन्तु जब मुम्बई के डांस–बारों को बन्द करा दिया गया तो इनके सामने
पुनः रोजी–रोटी की समस्या खड़ी हो गई, फलतः ये अपने मूल–स्थान बसई में पुनः आ बसीं। चूँकि अब यहाँ भी इनको यह कार्य दुपके–चोरी
ही करना पड़ रहा था अतः अब इन्होंने अपने ठिकाने बदलकर सिकन्दरा की कुछ गलियों एवं कॉलोनियों तथा होटलों में पनाह ले रखी है।

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल

गोरखपुर भी नहीं है अच्छूता जिस्मफरोशी के गोरखधन्धे से

पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहर और प्रदेश के मुखिया योगी आदित्य नाथ की नगरी गोरखपुर में भी जिस्म - फरोशी का गोरखधंधा खूब फल–फूल रहा है। यहाँ स्कूली छात्राओं और ग्रामीण क्षेत्रों की युवतियों को इस गन्दे धन्धे में धकेला जा रहा है। इस कार्य में जहाँ स्थानीय गुण्डों का भरपूर सहयोग मिल रहा है वहीं पुलिस की कार्य–शैली भी सन्देह के घेरे में है। इसकी शिकायत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक भी की जा चुकी है। इस बात की भी चर्चा है कि यहाँ सम्भ्रांत परिवारों की लड़कियाँ भी स्वेच्छा से इस धन्धे की ओर कदम बढ़ा रही हैं। इन छात्राओं और लड़कियों को दलालों के माध्यम से 300/– से लेकर 30,000/– तक में ग्राहक को सौंप दिया जाता है। यहाँ के जिन होटलों में कमरे 300/– प्रतिदिन के हिसाब से आम यात्रियों को मिल जाया करते थे, इस गोरखधंधे के कारण 1500/–प्रतिदिन तक बुक किए जा रहे हैं। यदि इन युवतियों को कोई टोकना भी चाहता है तो ये अपने पले हुए गुण्डों से उसकी अच्छी–खासी मजामत भी करा देती हैं।

– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल

वेश्यावृत्ति के लिए बदनाम : नटपूर्वा गाँव

उत्तर प्रदेश की राजधानी से मात्र 250 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है नटपूर्वा गाँव। यहाँ की आबादी लगभग 5000 है। यहाँ की औरतें विगत 400 वर्षों से वेश्यावृत्ति करती आ रही हैं। इस धन्धे से यहाँ के डेरा–डंडा वाले नट जाति के लोग जुड़े हुए हैं। नट जाति के लोगों के अतिरिक्त यहाँ ब्राह्मण और ठाकुर जाति के लोग रहते हैं। ये खेती के कार्य से जुड़े रहे हैं। ये लोग खेती के काम से निवृत्त होकर रात्रि को अपनी थकान मिटाने के लिए इन नट जाति की महिलाओं के साथ इनके घरों में बैठते थे और शराब आदि पीकर उनके साथ अपनी कामेच्छा की पूर्ति करते थे।नट लोगों के बेहद आलसी होने के कारण
ये नट जाति की महिलाओं को अपने खेतों में काम के लिए पगार पर रख लेते थे। अतिरिक्त पैसे का प्रलोभन देकर ये रात्रि को उनके साथ मनोरंजन भी करते थे।
इस गाँव के अधिकांश बच्चों को अपने पिता तक का नाम मालूम नहीं है। यद्यपि कुछ गैर सरकारी संगठनों के प्रयासों से यहाँ बच्चों के लिए स्कूल्स भी खोले गए हैं किन्तु उनके प्रयास भी संतोषजनक परिणाम नहीं दे पा रहे क्योंकि ये बच्चे सुधरना ही नहीं चाहते।

– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल

वेश्या बस्ती सोनागाछी

भारतवर्ष के चार सबसे बड़े महानगरों
में से एक कोलकाता 1911 तक देश
की राजधानी भी रहा है। कोलकाता का सोनागाछी क्षेत्र एशिया का सबसे
बडा रेड लाइट एरिया है। 1980 से पहले तक कोलकाता की आबादी देश
में सर्वाधिक थी। आज भी आबादी के
हिसाब से इसका दूसरा स्थान है। पाँचवें बडे बंदरगाह के रूप में पहचान बनाने वाला कोलकाता 2001
से पहले कलकत्ता के नाम से जाना जाता था। यहाँ 5 अक्टूबर 1865 को
आए एक भयंकर समुद्री तूफान में 65000 लोग काल–कवलित हो गए।
यहाँ पर ही दुनिया का बारह सौ साल पुराना सबसे बडा पेड है। दुनिया का सबसे बडा फुटबॉल स्टेडियम भी कोलकाता में ही है। हेडेन गार्डन नामक दुनिया का तीसरा सबसे बडा क्रिकेट स्टेडियम भी कोलकाता में ही है । भारतवर्ष में मेट्रो की शुरुआत का श्रेय भी कोलकाता को ही जाता है। यहाँ का हावडा ब्रिज दुनिया के सबसे बडे ब्रिजों में से एक है। पश्चिम बंगाल के सोनागाछी में एक अनुमान
के मुताबिक 15000 के लगभग वेश्याएँ रहती हैं जिनमें से 12 से 17 साल की उम्र की भी तकरीबन 12000 बालाएँ वेश्यावृत्ति के काले धन्धे में लिप्त रही हैं।

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल